ओमशांति। मीठे–2 सिकीलधे बच्चे इस गीत का अर्थ जानते हैं। बरोबर माया ने हमारे ऊपर वार किया और कीचड़ में डाल दिया। सतयुग में तो सदैव सुख ही सुख है। शिवबाबा कहते हैं– मेरे लाडले सालिग्राम बच्चे, तुम सतयुग में कितने सुखी थे; फिर माया आकर चिपटी, फिर कितना घोर अंधियारे में पड़ गए हो। अभी आकर मैं तुमको कैसे जग(ा) रहा हूँ– कुम्भकर्ण की नींद से अथवा आसुरी नींद से। मनुष्य कुछ नहीं समझते हैं। भल मनुष्य; परन्तु जैसे जनावर हैं। कुछ भी पता न है– हमारा बाप कौन है? भक्तिमार्ग में कहते हैं– ओह गॉड फादर! रहम करो; परन्तु समझते नहीं, हम कैसे दुःख के कीचड़ में अथवा विषय सागर, कुम्भीपाक नर्क में आकर पड़े हैं। स्वर्ग क्या है, नर्क क्या है, कुछ भी नहीं जानते हैं। बिल्कुल घोर अंधियारे में पड़े हैं। दुःख के तो अब पहाड़ गिरने हैं। मनुष्य समझते हैं, आपस में माथा मारते शांति हो जाएगी; परन्तु बाप समझाते हैं, पुरानी दुनिया खत्म हुई कि हुई। यह तुम ब्राह्मण कुल भूषण, तुम जानते हो– पुरानी दुनिया बदल रही है। कौन बदलाय रहे हैं? बिलवेड मोस्ट मात–पिता। तो फिर औरों को भी जगाना चाहिए। बिचारों को कोई पता नहीं है। विद्वान–आचार्य–पंडितों ने ऐसी–2 बातें शास्त्रों में लिख सबको सुलाय दिया। तो जैसे बाप का फर्ज़ है जगाना। बच्चों को भी बहनों–भाइयों को जगाना चाहिए। कुम्भकर्ण की नींद में ऐसे सोए पड़े हैं जो भगवान खुद आकर जगाते हैं। जगाया जाता है न– (उठो), अब सवेरा होता है। बाप भी कहते हैं– अब घोर अंधियारे से दिन होता है, अब जागो। इस नींद को मनुष्य नहीं जानते हैं। बाप है बिलवेड मोस्ट तो बच्चे भी ऐसे बिलवेड मोस्ट होने चाहिए। बिलवेड मोस्ट गॉड फादर से तुमने जन्म लिया है। बरोबर बिलवेड मोस्ट हेविन के मालिक बन रहे हो। भारतवासी हमेशा ल०ना० को, रा०कृ० को बिलवेड मोस्ट कहते हैं। कृष्ण को कितना याद करते हैं। ऐसा बिलवेड मोस्ट किसने इन्हों को बनाया, यह कोई भी नहीं जानते। बाप आकर फिर से नॉलेज दे, फिर से मोस्ट बिलवेड प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बना रहा है। यह कितनी बड़ी कॉलेज है! पढ़ने वालों के लिए कितने बड़े–2 ही(रे)–जवाहरों की कुर्सियाँ आदि होनी चाहिए। भक्तिमार्ग में भी सोमनाथ का मंदिर बनाया तो कितना हीरे–जवाहरातों से सजाया है और यहाँ पढ़ते कितने साधारण हैं। तो बच्चों में भी नम्बरवार हैं। बाप कहते हैं, मुझे याद करो। कितनी सहज बात है। यह है ही सहज योग। फिर और को भी जगाओ। अपने–2 घर में भी यह बोर्ड लगा दो– बहनों और भाइयों! अपने प०पि०प० से आकर स्वर्ग के सदा सुख का वर्सा प्राप्त करो, इस पुरानी दुनिया के होवनहार विनाश होने से पहले। ऐसे बोर्ड और कोई भी घर में लगाय नहीं सकता। बाप कहते हैं– बच्चे, बहुत रहमदिल बनो। खूब जगाओ। निमंत्रण पत्रें छपाओ– बहनों–भाइयों! आकर अपने प०पि०प० से अपना जन्म सिद्ध अधिकार, स्वर्ग का वर्सा लो। 100% प्योरिटी–पीस–प्रॉसपेरिटी का वर्सा लो। एड्रेस लिख दो– ब्रह्माकुमारियाँ। ऐसे लाखों पर्चे बाँटो। ऊपर में गीता का भगवान शिवबाबा भी हो। नीचे लिखो– इस बाप से 21 जन्मों का वर्सा लेना तुम्हारा हक है। फिर बाजू में भल ल०ना० का चित्र भी लगा दो। लाख–2 छपाय अपने–2 शहर में एरोप्लैन से गिराओ। वेसकोप(वाइसकोप) में डालो। इसको कहा जाता है– कम खर्च बाला नशीन, और बहुत सहज है। हर एक अपने–2 बड़े–2 शहरों में सर्विस करें। खर्चा तो जास्ती नहीं है। गाँधी ने जब (फॉरनर) से राज्य लिया तो करोड़ों रु. खर्चा हुआ, करोड़ों मनुष्य बिचारे बरबाद हुए। यहाँ तो बरबादी की कोई बात नहीं है। गाँधी बापू जी को जो कुछ मिलता था, वह इस ही काम में लगाते थे। बहुत मनुष्य जेवर आदि ले आते थे, फिर गाँधी खास कर राज्य लेने के काम में लगाते थे। यहाँ तो सारी बात तुम्हारी बुद्धि की है। सेन्टर खोलो, बोर्ड लगाओ, तुम्हारे पास बहुत आवेंगे। तुम बच्चे सर्विस के लिए विचार–सागर–मंथन नहीं करते हो। बाबा बहुत डायरैक्शन देते रहते हैं– ऐसे न करो। माया के तूफान तो खूब लगेंगे। तुम कोशिश करेंगे बाबा को याद कर सृष्टि को पवित्र बनावे, माया तुम्हारी याद भुला(य) देगी, योग तोड़ देगी। सारी बात तो प्युरिटी है। कन्या भी पहले प्योर है तो माँ–बाप आदि सब उनके आगे (माथा)

झुकाते हैं, फिर कन्या शादी करती है तो सब जगह माथा टेकती है। प्युरिटी का फर्क देखो! वैसे ही अपवित्र मनुष्य देवताओं के आगे, सन्यासियों के आगे माथा टेकते रहते हैं। आजकल तो बहुत अंधश्रद्धा है। जो सन्यासी माता को विधवा बनाय देते हैं, कहते हैं– नारी नर्क का द्वार है! फिर माताएँ जाकर उनके चरण धोकर पीती हैं, नग्न(नमन) करते हैं। यह है अंधश्रद्धा। बाप समझाते हैं, तुम यह क्या करते हो! तुम पति को गुरु, ईश्वर आदि मानते थे, फिर गुरुओं पास क्यों जाते हो? कहते हैं– हिन्दू नारी का पति ही ईश्वर है। वास्तव में है शिवबाबा। वह ही बाप,टीचर,गुरु,ईश्वर,पति सब कुछ है। उनका मर्तबा फिर विद्वान–पंडितों ने लौकिक पति को दे दिया। अब प०पि०प० तो बाप है, वह थोड़े ही बैठ बच्चों से ऐसे पैर धुलवाएगा व माथा टिकवाएगा। बाप तो बहुत प्यार से बच्चों की पालना करते हैं। कहते हैं– तुमने आधा कल्प एक/दो को ज़हर पिलाय आदि–मध्य–अंत बहुत दुःख दिया है। यह है मृत्युलोक, आदि–मध्य–अंत दुःख है। सतयुग है अमरलोक। उसमें आदि–मध्य–अंत सुख रहता है। भारत ही स्वर्ग था न! तो अब बाप बच्चों को राय देते हैं– एक तो, अपन पर रहम करो, बाप को याद करो और पवित्र बनो। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान रहना है। व्यवहार भी सबको करना है। बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, विख के लिए शादी न करो और जो शादी की हुई है, उनको कहते हैं– एक जन्म (फोर) माई सेक पवित्र रहो। बच्चे, मेरी दाढ़ी की इज्ज़त रखो। भारतवासियों को स्वर्गवासी बनाने में मदद करनी है। विकारों में मत जाओ। बाप, सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का नॉलेज बुद्धि में रखो। कहते हैं न– ईश्वर की गत–मत न्यारी है। ईश्वर की सद्गति देने की मत सबसे न्यारी है न। वह ही जाने, और न जाने कोय। बरोबर कोई भी नहीं जानते हैं न। खुद ही आय सद्गति के लिए श्रीमत देते हैं, स्वर्ग का मालिक बनाने लिए। दुनिया में भी देखो, कितने बड़े–2 आदमी भी हैं, उनको भी मारने में देरी नहीं करते हैं। गोली लगाई, यह मरा– मौत देखो कितने में होता है। यहाँ तो बाप तुमको गुप्त (वेश) में पढ़ाते हैं। वह है निराकार। अण्डर ग्राउंड आर्मी होती है न। अण्डर ग्राउंड का अर्थ समझते हैं? धरणी के अंदर कोई रहते होंगे। अण्डर ग्राउंड अर्थात् गुप्त वेश में। अण्डर ग्राउंड चोर भी होते हैं। कोई समझे, यह चोर है, चोरी कर एकदम गुम हो जाते हैं, वेश बदल देते हैं। बाबा भी आया हुआ गुप्त। कहते हैं– मैं इस शरीर में आया हूँ, नहीं तो मैं निराकार कैसे आकर पढ़ाऊँ? तुम तो गर्भ में जन्म लेती हो, मुझे तो गर्भ से जन्म नहीं लेना है। मैं किसकी मुखवंशावली नहीं बन सकता हूँ। मेरी वंश बनेंगे– बाबा, मैं आपका हूँ। बाप कहते हैं– मुझे इस मुख से आय बोलना होता है। अभी तुम इस बेहद के ड्रामा के आदि–मध्य–अंत को जानते हो। मैं ही तुम्हारा ...पिता, सखा–बन्धु, सब कुछ हूँ। गुप्त वेश में खुदा दोस्त मैं हूँ। तुमको एक सेकेण्ड में स्वर्ग की राजधानी का सा० कराता हूँ, तो भी कई मनुष्यों को संशय पड़ जाता है– यह जादूगर है, ऐसा है। अरे, यह तो ड्रामा अनुसार हुआ। ड्रामा में ऐसा था। ड्रामा को अच्छी रीति समझना है। बाप मिसल रहमदिल बनना है। बाप कितनी आत्माओं पर रहम करते हैं। वह है गॉड फादर। कहते भी हैं– रहम करो, ब्लिस करो। ब्लिसफुल है। फुल माना सारे बच्चों पर ब्लिस करते हैं। सबसे अच्छी ब्लिस है मुक्ति–जीवनमुक्ति। कोई वस्तु दुःख न देती है। पुरानी दुनिया को बदलना तो बाप का ही काम है। बाप कहते हैं, मैं तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बना रहा हूँ, पढ़ाय रहा हूँ। अब सिर्फ मुझे याद करो। यह है गुप्त रूह की मेहनत। यह मेहनत तो करेंगे न! "हे बच्चे", यह अक्षर बाप बिगर तो कोई कह न सके। हे बच्चे, तुम मूँझे क्यों हो? सिर्फ पवित्र (बनो)। मैं पतितों को पावन बनाने आया हूँ, मूत पलीत कपड़ धोने आया हूँ योगबल से। अब सिर्फ मुझ बाप को याद करो। इस याद से तुम सारे भारत को खास और दुनिया को आम स्वर्ग बनाय देते हो। सबको मुक्ति–जीवनमुक्ति दे मैं छुप जाता हूँ। फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाएगा। राजधानी स्थापन हो गई तो मैं क्या करूँगा! तुम बच्चों को ही राज–

भाग देता हूँ। कोई–2 बाप के बच्चे बहुत अच्छे होते हैं तो बाप की दिल खुश रहती है। बच्चा पैदा हुआ, बड़ी खुशी होगी। कोशिश करेंगे इनको ऊँच पद पर लगावे। कोई–2 तो ऐसे भी होते हैं, बाप 50 रु. कमाने वाला, बच्चे 50 हज़ार रु. कमाने लग पड़ेंगे। इनके (बाबा) के लौकिक बाप को 13 रु. पैन्शन मिलती थी। फिर बच्चा इतना बड़ा! बस, बाप ने बच्चे को कहा– बच्चे, अब काशीवास का प्रबन्ध करो, हम वहाँ ही शरीर छोड़ेंगे। शिवकाशी–2 कहते हैं न! बनारस में शिव की काशी है। शिव का काशीधाम है, मंदिर है; परन्तु मनुष्य समझते कुछ भी नहीं हैं। शिव कहाँ है? क्या वह काशी में आया था? शिवबाबा तो आया है भारत में, मगध देश में आया। शास्त्रों में भी है– जहाँ मगरमच्छ जैसे मनुष्य रहते हैं वहाँ आते हैं। खूब शराब–कबाब, गच्छ–कच्छ खाने वाले हैं। लिखा हुआ है; परन्तु मनुष्य अर्थ नहीं समझते हैं। ... अब हमारी बुद्धि जानती है। सरसों मिसल धाने में पिस जाएँगे। सतयुग में तो होगा एक धर्म। वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी डीटी वर्ल्ड सॉवरंटी। ल०ना० का राज्य था। वह किसने और कब स्थापन किया? कलियुग अंत में तो कुछ भी नहीं है, ठन–2 गोपाल है। कितना लड़ाई–झगड़ा, मारामारी चलती है! इस समय खूने नाहक का पार्ट है अर्थात् नाहक किसका खून करना। हिरोशिमा में बॉम्ब्स गिरे, देखो क्या हाल हो गया! अभी तक बीमार हैं। यह बेहद का विनाश होगा तो हस्पतालें, डॉक्टर आदि थोड़े ही होंगे। इतने सब खत्म कैसे हो जावेंगे, कैसे अर्थक्वेक में दब जावेंगे, फ्लड्स(बाढ़) में चले जावेंगे! ऐसे थोड़े ही होगा जो बीमार पड़ चिल्लाते रहेंगे, जैसे आग देकर जलाते हैं। अभी तो बिजली पर ऐसा निकाला है– सेकेण्ड में खलास। इतने सब मनुष्यों का विनाश कैसे होता है– यह भी वण्डर है न! सभी नैचुरल कैलेमिटीज़ मदद करती हैं। यह कोई नई बात नहीं, अनेक बार यह स्थापना–विनाश–पालना का कार्य चला है। बच्चे जानते हैं, अनेक बार राज्य लिया है, गँवाया है। यह विनाश तो ज़रूर होगा, नहीं तो सतयुग कैसे स्थापन हो! आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन होता है तो और सब धर्म, डार–टार–टालियाँ प्रायःलोप हो जाती हैं। फिर एक ही धर्म रहता है। यहाँ तो अनेक धर्म हैं। रात पूरी हो दिन होना है, वण्डर है न! यह बाप की करामत है। बाप कहते हैं– मुक्ति–जीवनमुक्ति के लिए कितना मुझे याद करते हैं, कितने व्रत नेम रखते हैं। सात रोज़ सिर्फ जल पीते थे। समझते थे– बस, ऐसे रहते–2 प्राण निकल गए तो कृष्णपुरी में पहुँच जावेंगे। इस ख्याल से व्रत नेम रखते थे। अब बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, सिर्फ मेरी मत पर चलो। सब कहते हैं– हम राजाओं का राजा बनेंगे, लक्ष्मी को वरेंगे। (नारद का मिसाल) तो बच्चों को सब राज़ बताकर सदा सुखी, सदा सलामत बनाते हैं अर्थात् बच्चों को एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनाकर, खुद गुम हो जाते हैं। बाबा खुद कहते हैं– मैं निर्वाणधाम में चला जाऊँगा। इसको सच्ची–2 निष्काम सेवा कहा जाता है। मनुष्यों को अच्छे व बुरे कर्म का फल तो ज़रूर मिलता है। बाबा को तुम क्या फल देंगी! बाबा तो है सबको फल देने वाला, न कि लेने वाला। कहते हैं– कदम–2 पर श्रीमत लेंगे तो तुम्हारे कदम–2 में पद्म हैं। तुम जानते हो, बाबा के वर्शन्स हमको स्वर्ग का मालिक बनाने वाले हैं। चार्ट रखो– ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप को कितना समय याद करता हूँ? बाबा अनुभव के ... बतलाते हैं। (आहिस्ते–2) दौड़ी पहनते चलेंगे, रिज़ल्ट अंत में निकलेगी। ऐसे थोड़े ही है, ट्रेन तकड़ से(पकड़ते ही) स्टेशन पर पहुँच जावेगी। शीघ्र आ जाए तो भी फ्लेग मिल जावेगा। पूरे टाइम पर स्टेशन पर पहुँच जावेगी। पुरुषार्थ बहुत करते हैं। हर एक का कल्प पहले माफिक पुरुषार्थ होता रहता है। साक्षी होकर देखते हैं। हर एक सेंटर की ब्राह्मणी साक्षी हो देखती है– यह तो बहुत अच्छा पुरुषार्थी है। रेगुलर स्टूडेंट बनना चाहिए। सो भी सात रोज़ पहले पढ़ो, फिर रेगुलर स्टडी करनी है। मन्मनाभव, मद्याजीभव की हर वक्त श्वासों–श्वास यह स्टडी करो। बाप को याद करते रहो।

यह स्टडी हुई न। उठते–बैठते–चलते–टट्टी पर जाते तुम यह स्टडी करो अर्थात् बाप–वर्से को याद करो तो बड़ी मौज़ में बैठ जावेंगे। याद से विकर्म विनाश होंगे। याद न करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। मुख्य है ही याद। ऐसे नहीं, हमको योग में बिठाओ। नहीं। कहाँ भी बैठे,चलते,खाते तुम आप ही याद करो। खास बिठावें क्यों? बाप को याद करते तुम चलते जाओ, कब तुम थकेंगे नहीं, इतनी ताकत मिलेगी। तुम पुरुषार्थ करके देखो। बाप कहते हैं– बच्चे, संशयबुद्धि न बनो। संशयबुद्धि माया बनाती है। बाप में निश्चय बुद्धि विजयन्ति, तो वर्सा भी मिलेगा। बुद्धि से समझने की बात है। विघ्न आवेंगे। कोई से रूसने की भी बात नहीं। तुम क्यों कमजोर बनते हो? लक्ष्य तो मिला हुआ है न! कहते हैं– हमारी ब्राह्मणी बदलने से हम ढीले पड़ जाते हैं। ब्राह्मणी लिखती है– 15 रोज़ छोड़ने से डगमग जाते हैं। क्यों ऐसा? रेत के ढेर पर खड़े हैं क्या! दूसरी ब्राह्मणी से बनती नहीं। बाप कहते हैं– मन्मनाभव, ब्राह्मणी के पिछाड़ी क्यों लगते हो? सिन्धवर्कियों के बहुत दुकान होते हैं, फिर एबल हैण्ड अच्छे कारोबार चलाते हैं। मैनेजर लोग भी सम्भालते हैं। प्राइम–मिनिस्टर बाहर जाते हैं तो दूसरे गंदी(गद्दी) भर लेते हैं कि टेरा–बाँका कारोबार हो जाता है। बाप समझाते हैं– अपन को मजबूत बनाना है। ब्राह्मणी कब है, कब न है। चेन्ज भी किया जाता है। ब्राह्मणी नहीं तो गिर पड़ते हैं। लिखते हैं, ब्राह्मणी को न चेन्ज करो। चेन्ज क्यों न करे! तुम क्यों नहीं तख्तनशीन बनते हो? पुरुषार्थ करो मम्मा–बाबा के तख्तनशीन बनने। मास्टर रहमदिल, मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर ब्लिसफुल बनना है। रास्ता बताना है। यह रास्ता कोई जानते ही नहीं। तुम जाकर बाप का परिचय दो। मोस्ट बिलवेड बाप आए हैं, कहते हैं– मुझे याद करो तो अंत मते सो गते हो जाएँगे। मैं तुमको ठिकाना दिखाता हूँ, तुम असल परमधाम के वासी हो। अब बाप को याद करो; क्योंकि पापों का बोझा सिवाय योग अग्नि से भस्म हो न सकेगा। हर एक कहता है– बाबा को याद करते–2 बाबा पास चले जावेंगे। राम नाम कहने व कृष्ण को याद करने से क्या होगा! या सर्वशक्तिवान बाप को याद करना है। कृष्ण कोई सर्वशक्तिवान है क्या? बाप से शक्ति लेकर तुम वह देवता बनते हो, तो उनको सर्वशक्तिवान थोड़े ही कहेंगे। अच्छा, बी०के० को भी वार्निंग देते हैं– यहाँ दास–दासी रख, उनसे अपनी सेवा नहीं करानी है। यहाँ सर्विस लेंगे– यह ग्लास उठाओ, कपड़े धुलाई करो, यह करो, तो वहाँ दास–दासी बनेंगे। यहाँ रानी बनकर नहीं बैठना है। हर एक को अपने हाथ से सब करना चाहिए। स्थूल सर्विस लेंगे तो फिर देना पड़ेगा; इसलिए कोई भी बात हो, झट बाबा को रिपोर्ट करो। बाबा सावधानी न देंगे तो पक्के हो जावेंगे। हर एक सेंटर के बच्चों को आपस में मिलना चाहिए– सर्विस को कैसे बढ़ावें। सर्विस तो करनी है न! सेल्समैन बनना है। अविनाशी रत्नों का दान ज़रूर करना है। कहा जाता है– धन दिए, धन न खूटे। तुम डबल फिलैंथ्रॉपिस्ट बनते हो, सब कुछ बाबा को देते हो। फिर शिवबाबा जो खज़ाना देते हैं, वह भी बाँटते हो। अच्छा, मीठे–2 शिवबाबा, दादा, मम्मा का मीठे–2 सिकीलधे लकी स्टार प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग। पतित–पावन एक ही बाप है, फिर गंगा को पतित–पावन क्यों कहते? मनुष्य तीर्थों पर जाते हैं तो निर्विकारी रहते हैं, फिर आकर गटर में पड़ते हैं। वैसे ही सन्यासी भी कुम्भ के मेले पर जाते हैं गंगा स्नान कर पाप धोने, फिर कुम्भ का मेला लगेगा तो फिर जावेंगे स्नान करने। तो गोया फिर पतित बन जाते हैं। बाप समझाते हैं, पतित दुनिया में पावन कोई हो नहीं सकते। यह है ही नर्क। बाप आकर भारत में किंगडम स्थापन करते। कलियुग में फिर किंगडम खत्म हो प्रजा का राज्य हो जाता है। बिल्कुल खाली खोखे हैं। बहुत मीठा, रहमदिल बनना है। किसको दुःख न देना है, प्यार से काम लेना चाहिए। प्यार से तुम किसको भी वश कर सकती हो। किसको थप्पड़ मारना, गुस्से की निशानी है। ॐ